

Chirping Sparrow

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

दीपक एक जलाना साथी

गुमसुम बैठ न जाना साथी!
दीपक एक जलाना साथी!

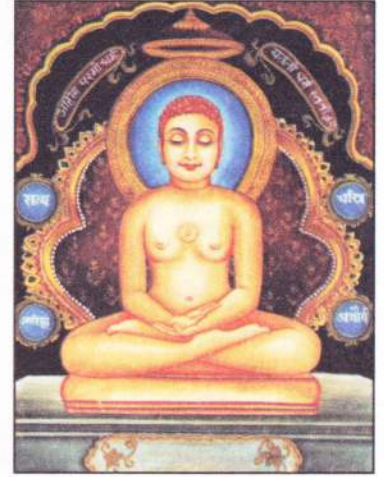
सघन कालिमा जाल बिछार
द्वार -देहरी नजर न आए
घर की राह दिखाना साथी!
दीपक एक जलाना साथी!

घर आंगन लीप-पोतकर
कोने- अंतर झाड़-झूड़कर
मन का मैल छुड़ाना साथी!
दीपक एक जलाना साथी!

एक हमारा एक तुम्हारा
दीप जले चमके चौबारा
मिल जुल पर्व मनाना साथी!
दीपक एक जलाना साथी!

आ सकता है कोई झोंका
क्योंकि हवा को है किसने रोका
दोनों हाथ लगाना साथी!
दीपक एक जलाना साथी!

... अज्ञात



वीर निर्वाणोत्सव दीपावली



श्रीमती विमला जैन



भारत के राष्ट्रपति द्वारा राजगढ़ जिले में कार्यरत जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती विमला जैन को मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के पद पर पदोन्नत किया गया है। श्रीमती जैन मध्यप्रदेश की वरिष्ठतम जिला एवं सत्र न्यायाधीश हैं। राजगढ़ के पूर्व वे टीकमगढ़, सीहोर एवं दतिया जिले में इसी पद पर कार्यरत रही हैं। इसके पूर्व उन्होंने विभिन्न न्यायिक पदों पर ग्वालियर, रायसेन, शिवपुरी, देवास, भोपाल एवं इन्दौर जिलों में सफलतापूर्वक कार्य किया है।

सागर जिले के छोटे से एवं अभी तक पहुँच विहीन ग्राम विदवॉस में जन्मी श्रीमती जैन का 16 वर्ष की आयु में विवाह हो गया था। उन्होंने विवाह के पश्चात् अपने पारिवारिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वाह करते हुए बी.ए., एम.ए., बी.एड., एल.एल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त की। उन्होंने गत 32 वर्षों से प्रदेश के विभिन्न न्यायालयों में पूरी निष्ठापूर्वक अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं। सुस्थापित मानदण्डों के अनुरूप पूरे साहस के साथ निश्चित समयावधि में पारित अपने ठोस एवं प्रभावी निर्णयों द्वारा उन्होंने न्यायिक जगत एवं प्रदेश की विधि व्यवस्था के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों, वरिष्ठ अधिवक्ताओं एवं सुस्थापित समाचार-पत्रों द्वारा उनके अनेक निर्णयों की सराहना की गई है। श्रीमती जैन भारत में पर्यावरण विधि, नगर एवं ग्रामीण विकास संहिता एवं शिक्षा विधि संहिता की सहलेखक हैं। उन्होंने विश्व के सभी महत्वपूर्ण देशों का भ्रमण किया है।

श्रीमती जैन ने बुन्देलखण्ड के साथ-साथ सम्पूर्ण प्रदेश को गौरवान्वित किया है। मैत्री समूह उनकी उपलब्धियों के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।



YOUNG ACHIEVERS



Dr Anshul Jain, Vidisha

YJA 2004,
M.B.B.S, Doing MD
9th rank in All India Pre P.G. Exam



Apurva Singhai, Chhindwara

YJA 2008
XII- 89.9%
AIEEE State rank 80

 **Chirping Sparrow**
Year - 7, Issue - IV

Chirping Sparrow is published by
Maitree Jankalyan Samiti
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamoooh@hotmail.com,
Website : www.maitreesamoooh.com Mobile: 94254-24984

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of
Maitree Jankalyan Samiti.

Violence In Our Lives

Violence (HIMSA) is defined as obstruction of the life processes be it of self or of others. Violence has two aspects, abstract (mental) violence that is the violence of thoughts and feelings, and physical violence that involves causing bodily injury and/or death. Generally, individuals go to great lengths to avoid physical violence but they fail to exercise similar care to minimize abstract violence.

Roots of violence:

Describing the root causes of violence, Mahatma Gandhi wrote, "The Roots of Violence: Wealth without work, Pleasure without conscience, Knowledge without character, Commerce without morality, Science without humanity, Worship without sacrifice, Politics without principles." Anyone who wishes to practice nonviolence in life should bear these truths in mind.

Undercurrent of violence in society:

Religious fundamentalism and blind activism lead to disharmony and conflict in society. It has fueled mass violence and wars in past. We should refrain ourselves from such activities. We should practice the virtues of tolerance and forgiveness. This is essential for our practice of nonviolence. Instead of showing off the material wealth of our religious establishments by organizing charades, we should purify our conduct by minimizing intrigue and greed, and avoid corruption in our business and profession. We should be tolerant and refrain from sectarianism. We should always look inwards and censure our own undesirable practices.

Undercurrent of violence in daily life:

Virtues like compassion, charity and vegetarianism are extremely important aspects of the practice of nonviolence. However, in many instances, people disregard subtle aspects of violence such as making misleading statements (untruth), taking more than one's fair share of resources (stealing and possessiveness), manipulation, deception, bribery and corruption. In some instances, even altruistic individuals indulge in these improper practices that amass considerable wealth and achieve prominent social status. They do not realize that their practices involve dark shades of passion and constitute mental violence of self. Further, their actions may hurt the feelings of those who are betrayed by them.

War-related violence:

According to Acharya Umaswami, the author of TATTVAARTH SUTRA, "nonviolence is unlimited tolerance that is unconditional and that imparts supreme reverence for all forms of life." In this light there is no question of a 'just war'. Violence breeds violence, Period. Nevertheless, individuals try to justify wars based on their own viewpoint. They give excuses such as punishing the evil, combating insurgency and terrorism, bringing relief and prosperity to the oppressed and, establishing peace and order. Wars involve extreme violence against the enemy, destruction of property and disruption of life. In addition to these, the experiences of war cause deep moral wounds that are mostly ignored. The program 'Religion & Ethics Newsweekly' of May 28, 2010, documented some eye-opening facts about the moral wounds of war. Tens of thousands of American soldiers returning from the war zone struggle with the warning signs of post-traumatic stress disorder (PTSD) with symptoms like nightmares, insomnia, hypervigilance and guilt, and for some something even deeper - a wounding of the soul. The correspondent Lucky Severson states, "With the increase in crime and suicide among veterans of Iraq and Afghanistan, the notion that war can actually damage or warp the soul has been gaining traction among experts in the field.

In view of these facts, it is rather difficult to justify war even with the reasoning followed by proponents of 'just war'. Seeking a peaceful solution and sacrificing one's interest is a better way. We should support such an approach to resolve conflicts.

Courtesy Jain Study Circular: Observations & Views, Jain Study Circular October-December 2010



हिंसा का अर्थ है अपने अथवा दूसरे की जीवन चर्या में व्यवधान उत्पन्न करना। हिंसा के दो पहलू हैं—परोक्ष (मानसिक) हिंसा अर्थात् विचारों और भावनाओं से उत्पन्न होने वाली हिंसा एवं प्रत्यक्ष (शारीरिक) हिंसा, जिसमें किसी भी जीव को शारीरिक हानि पहुंचती हो। आम तौर पर हम प्रत्यक्ष हिंसा को टालने के लिए अनेकों प्रयास करते हैं, मगर परोक्ष हिंसा को कम करने की बात नजर अंदाज कर जाते हैं।

हिंसा की जड़ें

महात्मा गांधी कहते हैं : कार्य बिना संचित सम्पदा, विवेक बिना आनंद, चरित्र बिना ज्ञान, नीति बिना व्यापार, मानवता बिना विज्ञान, त्याग बिना आराधना, सिद्धांत बिना राजनीति—हिंसा की जड़ें हैं। अहिंसा पालन करने वाले लोगों को इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

समाज में हिंसा का प्रभाव

यह आम बात है कि धर्म और राजनीति की चर्चा मतभेद उत्पन्न करती है, फिर भी कई व्यक्ति विशेषतः धर्म के 'ठेकेदार' आदि दूसरे धर्म के विचारों तथा क्रियाओं का विरोध करते पाए जाते हैं। वे हमेशा ये जताने का प्रयास करते हैं कि उनकी मान्यताएं एवं जीवनशैली दूसरों से बेहतर है। ऐसे लोग समाज में विवाद एवं अशांति का कारण बनते हैं। यह एक प्रकार की हिंसा ही है जो और भी अधिक हिंसा का कारण बनती है। ऐसी बातों से हमें दूर रहने का प्रयास करना चाहिए। हम दूसरों की क्रियाओं की बुराई न करें और सहनशीलता एवं क्षमा के गुणों का पालन करें। यह अहिंसा पालन के लिए आवश्यक है। हमें प्रदर्शन और दिखावे से भी बचना चाहिए। इसके बजाय लोभ कम करके अपना चरित्र शुद्ध करने और अपने व्यवसाय-पेशे में भ्रष्टाचार को टालने का प्रयास करना चाहिए। सहनशील बनकर साम्प्रदायिकता को रोकना चाहिए। हमें सदा अपने अंतर में झांककर अपनी गलत प्रवृत्तियों को दूर करना चाहिए।

रोजमर्रा में हिंसा

दया, दान और शाकाहार जैसे गुण अहिंसा के पालन के लिए अति आवश्यक हैं। परन्तु अनेक परिस्थितियों में लोग हिंसा के सूक्ष्म पहलुओं को नजरअंदाज कर जाते हैं जैसे कि—भ्रामक/असत्य वचन कहना, अपनी आवश्यकता से अधिक हिस्सा लेना (चोरी/कब्जा करना), चालाकी, ठगी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार आदि। कभी-कभी अच्छे व्यक्ति भी उच्च सामाजिक स्थान पाने के लिए अत्यधिक संपत्ति का संचय करने लगते हैं और स्वयं परोक्ष हिंसा में भागीदार बनते हैं। साथ ही वे उनकी भावनाओं को भी कष्ट पहुंचाते हैं जिन्हें वे धोखा दे रहे हैं।

युद्ध संबंधी हिंसा

तत्त्वार्थ सूत्र के रचयिता आचार्य उमास्वामी के अनुसार, "अहिंसा परम सहिष्णुता और हर जीव के लिए सम्मान के साथ ही साकार हाती है।" इसीलिए "उचित युद्ध" जैसी कोई बात हो ही नहीं सकती। फिर भी, कई व्यक्ति अपने दृष्टिकोण के अनुसार युद्ध को उचित ठहराने का प्रयास करते हैं। वे पापियों को दण्डित करना, शोषितों की सहायता तथा शांति व्यवस्था बहाल करने जैसे तर्क करते हैं। युद्ध में अत्यधिक हिंसा होती है, और जनजीवन का भारी नुकसान होता है। इसके अलावा युद्ध का अनुभव कई गहरे नैतिक घाव छोड़ जाता है जिसे हम अक्सर नजर अंदाज कर देते हैं। Religion & Ethics Newsweekly नाम से मई 28, 2010 को प्रसारित एक कार्यक्रम में युद्ध के ऐसे ही नैतिक घावों के बारे में कई आंखे खोलने वाले तथ्य प्रस्तुत किये गए थे। युद्ध से लौटने वाले दसों हजार अमेरिकी सैनिक Post-traumatic stress disorder (PTSD) जैसी बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। इसके कुछ लक्षण इस प्रकार हैं—बुरे सपने आना, अनिद्रा, अत्यधिक सावधानी तथा अपराधी महसूस करना। शांतिप्रिय समाधान ढूँढना और अपने स्वार्थों को त्यागना इससे बेहतर तरीका है। हमें विवादों को सुलझाने के लिए ऐसी ही सोच का प्रयोग करना चाहिए।

Change in Communication Address

New Address नया पता

Maitree Samooh, Post bag No. 15 Vidisha, Madhya Pradesh, PIN - 464002

Please send in all your communications related to Maitree Samooh, Young Jaina Achievers 2010, Chirping Sparrow etc to the above mentioned address only.

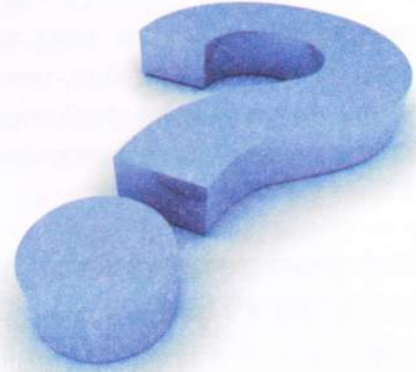
चर्चिंग स्पेरो, यंग अचीवर्स, शंका समाधान, पत्र, योर स्पेस या मैत्री समूह से किसी भी तरह के पत्राचार के लिए इसी पते का इस्तेमाल करें।

Q. मैंने ऐसा पढ़ा है कि आत्मा न तो मरती है न ही जन्म लेती है। इसका मतलब आत्माओं की संख्या में बदलाव नहीं हो सकता, फिर आबादी के बढ़ने का क्या कारण है? ऐसा भी हो सकता है कि अन्य गतियों के जीव पुण्य कर्म करके मनुष्य गति प्राप्त कर रहे हों? कृपया समझाइये।

A. वास्तव में आत्मा का जन्म-मरण नहीं होता, जन्म-मरण तो शरीर का होता है तभी तो कहने में आता है कि देहावसान हो गया, आत्मावसान हो गया ऐसा कोई नहीं कहता। यह तो निश्चित है कि आत्मा की संख्या निश्चित है। पर अन्य गतियों के जीव भी मनुष्य गति में जन्म लेते हैं, इसलिए मनुष्यों की संख्या में बदलाव होता है। मनुष्य गति में जिनका जन्म होता है, वे पुण्य के कारण ही किसी अन्य गति से आकर जन्म लेते हैं। लेकिन मनुष्य का जन्म लेना तभी पुण्य का कारण होता है जब उसमें मनुष्यता हो। मनुष्यता के बिना मनुष्य होना कोई विशेष बात नहीं है। देखने में आता ही है कि छोटे-छोटे जीव अधिक मात्रा में उत्पन्न होते हैं तब एकाध मनुष्य का जन्म होता है। घास इत्यादि बहुत मात्रा में अपने आप जन्म लेती है, वह भी जीव है। इसलिए छोटे जीव की उत्पत्ति की अपेक्षा संज्ञी पंच-इन्द्रिय मनुष्य का जन्म दुर्लभ ही है। मंगतराय की बारह भावना में लिखा है कि

दुर्लभ है निगोद से थावर, अरू त्रस गति पानी ।
नरकाया को सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्राणी ।
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावक कुल पाना ।
दुर्लभ सम्यक, दुर्लभ संयम, पंचम गुणठाना ।
दुर्लभ रत्नत्रय आराधन, दीक्षा का धरना ।
दुर्लभ मुनिवर के व्रत पालन, शुद्ध भाव करना ।
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन बोधि ज्ञान पावे ।
पाकर केवल ज्ञान नहीं फिर इस भव में आवे ।

अजय सेठी, अजमेर, राजस्थान



Q. What is the unique contribution of Digamber philosophy to Jainism?

A. The Digamber Jain practices have not only kept alive the tenants as pronounced by Tirthankars from Bhagwan Adinath to Bhagwan Mahavir but also their code of conduct. Digamber Jain monks may be few in numbers but they are superior in their penance. Only Digamber Jain monks have followed the passionless path of Bhagwan Mahavir even in these times. It is clearly stated in Shwetamber scriptures that only those, who are unable to remain naked, should accept clothes. This conclusively proves the basic principle of Digamber Jain philosophy.

Q. आज के समय में सच का महत्त्व कम होता जा रहा है, झूठा चालाक व्यक्ति हमेशा ऊंचाई को छू रहा है, ऐसा क्यों?

A. यह तो चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों में लिखा है। सोलह में से एक स्वप्न का फल लिखा है कि हाथी के ऊपर एक बन्दर उछल कूद कर रहा है और हाथी चुप-चाप खड़ा है। जितने सम्यकदृष्टि होंगे, सच्चा जीवन जिएंगे, ईमानदार होंगे वे चुप-चाप रहेंगे, बाकी जो हैं वे हाथी के ऊपर जैसे बन्दर उछल कूद कर रहा है वैसे हैं। बेईमान आदमी और चालाक आदमी आराम से अपना जीवन जियेगा। यह पंचम काल के लिये लिखा हुआ है, अपन देख भी रहे हैं। वर्तमान में शूद्र ही राज करेंगे, सोलह स्वप्नों में ऐसा भी लिखा हुआ है। देख ही रहे हैं अपन कोई भी ऐसी चीज नहीं है जो अपने देखने में नहीं आ रही हो। जिसका आचरण भ्रष्ट होगा वो राज करेगा और अच्छे आचरण वालों पर राज करेगा। तो ऐसे में अपन को क्या करना चाहिए, आचार्यश्री कहते हैं कि ऐसा तो होगा ही ऐसा सोच कर हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठना, यह एक बात। और दूसरी बात उसमें निमित्त नहीं बनना। हम तो हमेशा सच्चाई का सम्मान ही करेंगे। ठीक है! दुनिया अगर सच्चाई का सम्मान नहीं कर रही है, क्या करें! काल दोष है, लेकिन मैं तो हमेशा सच्चाई का ही सम्मान करूँ ऐसा हर कोई अपने मन में विचार रखे। भले ही स्वयं पूरा सच्चा न बन पाऊँ लेकिन सच्चाई का सम्मान तो करूँगा। हो सकता है स्वयं मेरा जीवन कुछ झूठा हो, लेकिन झूठ को मैं सम्मानित नहीं होने दूँगा।

अजय सेठी, अजमेर, राजस्थान



Q. महाराज आपने अपने प्रवचन में भगवान, गुरु और धर्म यह तीन आलंबन अपनी आत्म उन्नति के लिए सुझाये थे, मेरी जिज्ञासा यह है कि क्या प्रत्येक मुनि जिसने दिगम्बर मुनि दीक्षा धारण की है, वो सच्चे गुरु हैं क्या ? क्या वे संसार घटाने वाले गुरु हैं ? हमें उनका आलंबन करना चाहिए क्या ?

A. इसकी कसौटी ले लो, कसौटी यही है कि हमारे भगवान वो हैं जो 18 दोषों से रहित हैं और जन्म-मरण और कर्मों से जो मुक्त हो गए हैं। "विषयों की आशा नहीं जिसके साम्य भाव धन रखते हैं"—जिन्हें विषयों की आशा नहीं है, जो आरम्भ परिग्रह से रहित हैं, प्रपंच में नहीं लगते, अपने ज्ञान-ध्यान-तप में लगे हैं वे ही मेरे लिए गुरु हैं। शास्त्र की परिभाषा ये ही है कि जो भगवान के द्वारा कहा गया हो, जिसमें किसी प्रकार का विरोध न हो वो शास्त्र है। ऐसे विशेष गुण हों और जो हमें हमेशा वीतरागता का उपदेश देती हो, तत्त्व का उपदेश देने वाली ऐसी जिनवाणी (शास्त्र) है। सरल भाषा में कहें - छहढाला में लिखा है " जिनेन्द्र-देव और गुरु अन्तरंग और बहिरंग परिग्रह से भी रहित हों।" अकेले कपड़े उतरने से तो बहिरंग परिग्रह छूटा है, लेकिन अन्तरंग में भी छूटना चाहिए यह कसौटी है उसकी। भैया इसलिए कहा है "पानी पीजो छान के और गुरु कीजो जान के"। ऐसा जान लो कि अपना कल्याण इनके चरणों में होगा की नहीं, नहीं तो अपन और प्रपंच में फंस जाएंगे। लेकिन यहां यह भी ध्यान रखना कि आपको दिगम्बर मुद्रा जहां भी दिख जाए उसका अपमान नहीं होना चाहिए, उसके सम्मान की रक्षा हमेशा करना, चाहे वो स्वयं उस दिगम्बर मुद्रा का सम्मान कर पाता हो या न कर पाता हो। जिसने दिगम्बर मुद्रा धारण करी है वो स्वयं उस दिगम्बर मुद्रा का महत्त्व भले ही नहीं समझता हो लेकिन हम तो समझते हैं। उस दिगम्बर मुद्रा को देखकर के प्रणाम करना बस इतना ही हमारा काम है। इसके बाद अगर उनके चरणों में अपना मोक्ष मार्ग बनाना है तो फिर आप अपनी परीक्षा कर लो।

नितिन जैन, बीना

Q. क्या जमीकंद को सुखाकर उसका सेवन कर सकते हैं ?

A. हाँ। दो जमीकंद तो ऐसे हैं - हल्दी और सौँठ। इन दोनों के dehydration के बाद में वो bacteria से रहित हो जाते हैं। bacteria से रहित करने की 6 विधियों में से dehydration एक है, लेकिन वो dehydration सारे जमीकंद पर नहीं लगता वो सिर्फ हल्दी और सौँठ पर लगता है क्योंकि वे गीली अवस्था में भी antibiotic होते हैं उनके चारों तरफ इस तरह का secretion होता है कि कोई bacteria grow नहीं करता। और वे जमीन में बहुत depth में भी नहीं जाते, वे मुश्किल से कुछ 3-4 inch जमीन के नीचे रहते हैं और सूर्य प्रकाश उतनी जमीन को प्रासुक करने के लिए पर्याप्त है, और उसमें जीव राशि कम होती है। आज की science की भाषा में इसलिए यह दो चीजें अपने यहां पर मान्य है। बाकी सब चीजें और नीचे होती हैं वे stem root हैं। जैसे आलू stem root है और उसके तने में से निकली हुई जड़ों में वह bulb की तरह लगा रहता है।

मूंगफली तो जमीकंद है ही नहीं वो तो aerial root वाला पौधा है और हवा में लगता है। बाद में उसकी जड़ें भी जमीन से ऊपर रहती हैं। कभी खेती वाले से पूछ लीजियेगा, कि मूंगफली का पौधा तो पूरा ऊपर रहता है और उसकी जड़ें जो हैं वो जमीन से ऊपर आ जाती हैं और उनमें मूंगफली लगती है और फिर उसको क्या करते हैं कि चूहे चिड़िया बिगाड़ न दे तो थोड़ी सी उसके ऊपर मिट्टी ढक देते हैं, थोड़ा सा moisture भी चाहिए उसको बढ़ने के लिए, जब वो बढ़ना शुरू होती है उसमें दाना लगता है तब उसको थोड़ा सा दबा देते हैं। वास्तव में तो वो aerial root है मतलब वो underground root नहीं है। वो बाहरी पौधा है भूमिगत पौधा नहीं है, इसलिए मूंगफली जमीकंद के अंतर्गत नहीं आती।

स्वाति जैन, विदिशा



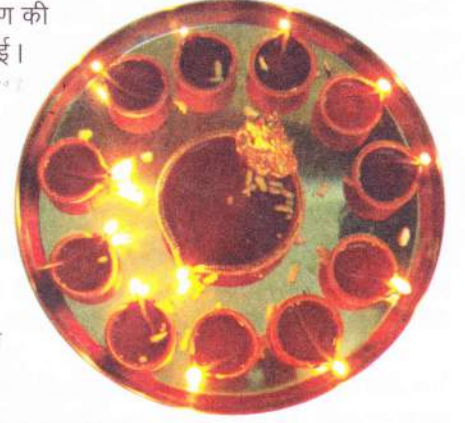
आपकी भी कोई शंका या प्रश्न हो तो हमें लिख भेजें। मुनिश्री द्वारा इसका उत्तर दिया जाएगा।

पता - मैत्री समूह, पोस्ट बॉक्स नम्बर 15, विदिशा (मध्यप्रदेश) पिनकोड - 464 001

दीपावली ऐसे बनायें

दीपावली के दिन दो बातें एक साथ हुई, प्रातः काल की बेला में भगवान् महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई है और गोधूली की बेला में गौतम स्वामी, गणधर महाराज को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। हम अगर इन दोनों बातों को प्रतीक रूप मान लें तो भगवान् महावीर स्वामी का निर्वाण तो उनके आत्म कल्याण में सहयोगी है और गौतम स्वामी का केवलज्ञान उनके आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण में भी कार्यकारी है। आज का पर्व आत्म कल्याण के साथ—साथ लोक कल्याण का भी पर्व है।

दीपावली को हम रोशनी का भी पर्व कह सकते हैं, इसे हम स्वच्छता का भी पर्व कह सकते हैं। यह अपने अन्तरंग और बहिरंग दोनों प्रकार की स्वच्छता का प्रतीक है। हम अपने अपने घरों को संवारते हैं, सजाते हैं, इसी के साथ साथ अन्तरंग के कर्मों को जीतने और कर्म कालिमा से मुक्त होने के लिए भी प्रयास करना चाहिए।



आज के दिन यदि हम सब मिल कर प्रण लें कि हमारे नगर में थोड़े बहुत जो ऐसे लोग हैं जिनको दीपावली के दिन भोजन तक उपलब्ध नहीं होगा और वो जहाँ रहते हैं वहाँ पर रोशनी की भी व्यवस्था नहीं होगी, तो हमें थोड़ा सा भोजन ऐसे लोगों को उपलब्ध कराएं। हम अपने घरों में इतने दीप जलाते हैं तो उन लोगों के घरों में भी एक दो दीपक उपलब्ध करा दें तो हमारी वास्तव में अन्तरंग की दीवाली मन जावेगी। दीपावली के दिन सब लोग केवल ज्ञान के प्रतीक दीपक को जलाते हैं तो हमारा एक छोटा सा दीपक भी दीपावली का दीपक कहलाने लगता है। उस दीपक में यदि हम घृणा और ईर्ष्या का तेल भरने की जगह, अगर प्रेम का और करुणा का या फिर सहानुभूति का तेल भरना चाहें तो उससे अच्छी दीपावली कोई हो ही नहीं सकती। आज के दिन हम तय करें की आडम्बर में दिखावे में फँस कर नहीं अपितु, सहज सरल हो कर के अगर अपने अन्तरंग के परिणामों को निर्मल करने के लिए दीपावली का त्यौहार मनाये। आज हम सब यह चिंतन करें कि आज जो हम रंगोली बनाते हैं— तो संस्कार की रंगोली बनाएं। दीपक जलाते हैं तो विश्वास के दीपक जलाये। हम पूजा करते हैं भगवान् की तो आस्था की पूजा करें, हम सजावट करते हैं अपने घर की तो सद्भावना की सजावट करें अगर गुण—धनि अपन बाँटते हैं तो स्नेह की गुण—धनि बाँटें, अनार चलाते हैं तो आशाओं के चलाएँ, बंदरवार बांधे तो ज्ञान के बंदरवार बांधें, द्वार अपने सजाएं तो विनय से सजाएं, पटाखे फोड़ें तो प्रसन्नता के फोड़ें, फुलझरी जलाएं तो प्रेम की फुलझरी जलाएं, कलश रखें तो परम्पराओं के रखें ऊपर श्रीफल संकल्प का हो और नैतिकता का उस पर स्वास्तिक बनाएं तो वास्तव में हम मुक्ति की आराधना कर सकते हैं और अपनी दीपावली सार्थक कर सकते हैं।

- मुनि क्षमासागर जी के प्रवचनों से साभार

जैसी करनी वैसी भरनी

किसी गांव में एक बड़ा ही अभागा वैद्य रहता था। बेचारे की वैद्यगिरी चलती नहीं थी। कहावत है कि प्यासा कुएं के पास जाता है, कुआं प्यासे के पास नहीं। लेकिन वैद्य की रीति उल्टी ही थी। वह स्वयं रोगियों की खोज में इधर—उधर चक्कर लगाया करता था। एक दिन सारे गांव का दौरा करने पर भी उसे कोई रोगी या दवा का ग्राहक नहीं मिला तो वह उदास होकर लौटने लगा। टहलता—टहलता वह गांव के बाहर तक चला गया। वहां एक वृक्ष के कोटर में उसने एक विषैले सांप को सोते देखा। उसे देखते ही वैद्य को कुछ कमाने की तरकीब सूझ गई। उसी वृक्ष से कुछ दूरी पर छोटे—छोटे बच्चे खेल रहे थे। वैद्य ने सोचा कि यदि इनमें से किसी लड़के को सांप से डसवा दूं तो सहज ही चिकित्सा का अवसर मिल जाएगा और मैं एक अच्छी रकम पा जाऊंगा।

पेट के लिए लोग बड़े—बड़े पाप करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वैद्य ने भी उन मासूम बच्चों के जीवन को संकट में डालने का फैसला कर लिया। केवल अपने स्वार्थ के लिए। वह घूमता—घामता उन बच्चों के पास पहुंचा और बोला, 'भाई, कोई मैना का बच्चा लेगा?' एक बालक झट से बोला, 'हां दादा, मैं लूंगा कहां है?' वैद्य बोला, 'आओ मेरे साथ, मैं दिखाता हूं। पर शोर नहीं मचाना, शोर सुनकर वह उड़ जाएगा।' वैद्य उस लड़के को उस वृक्ष के पास ले गया और कोटर की ओर इशारा करके कहा, 'देखो, उसी कोटर में है। धीरे—धीरे जाओ हाथ डालकर निकाल लो।' लड़के ने वृक्ष पर चढ़कर कोटर में हाथ डाला। वहां उसकी मुठ्ठी में जो वस्तु आई, उसने झटपट ऊपर खींच ली, देखा तो हाथ में मैना की जगह सांप की गरदन थी। लड़के ने झटके से सांप को दूर फेंक दिया। संयोग से वह वैद्य के ही सिर पर जाकर गिरा। वैद्य अपने बचाव के लिए बड़े जोर से उछला, पर तब तक सांप उसकी गरदन से लिपट चुका था। लाख कोशिश करने पर भी वैद्य उस सांप से छुटकारा नहीं पा सका। सांप ने उसे डस लिया और वह वैद्य छटपटा—छटपटा कर वहीं गिरकर मर गया। उसे अपनी करनी का फल मिल गया।

It was at the midnight of Diwali (Tithi: Kartik Krishna Amavasya) that Lord Mahavir achieved Nirvana after concluding his last Updeshana (sermon). On this occasion of Nirvana, people in the surrounding community celebrated by lighting lamps. From that day onward, people started to celebrate this day as Diwali by lighting lamps.

This occasion was also the beginning of the Mahavir Samvat, also known as Veer Samvat or Jain New year which starts on Kartik Sudi Ekam. The upcoming year will be called Veer Samvat 2537 starting from November 6, 2010 (Gregorian calendar). Thus the Jain Calendar was started about 527 years ahead of Western calendar. The Western calendar is based on the sun, in which a year is the time required for the earth to complete one orbit around the sun. This precisely measures 365 days 5 hours 48 minutes and 46 seconds.

The Jain calendar is based on both the sun and the moon; it uses a solar year but divides it into 12 lunar months. A lunar month is precisely 29 days 12 hours 44 minutes and 3 seconds long. Each of these months is divided into two parts called Shukla Paksha & Krishna Paksha based on the increasing or decreasing moon. Twelve such months constitute a lunar year of 354 days 8 hours 48 minutes and 36 seconds. To help the lunar months coincide with the solar year, the practice of inserting an intercalary (extra) month arose. So 60 solar months = 62 lunar months. Hence an extra month, called the Adhik Mas, is inserted every 30 months i.e. every 2 ½ years. Lunar days in the Indian calendar are called tithis. They are calculated using the difference of the longitudinal angle between the position of the sun and moon. Because of this, tithis may vary in length. Consequently, the tithi may or may not have changed by the time the day has changed at sunrise. And that is why we find at certain times a tithi being omitted, and at certain times, two consecutive days sharing the same tithi.

In the Indian calendar, seasons follow the sun; months follow the moon; and days, both the sun and the moon.

We Jains should take deep pride in that 599 BC, the birth year of Lord Mahavir, is the first recorded event in the Indian History. Prior to 599BC, there is sketchy information on names of different kingdoms and kings that existed in India, but there is no recorded time history. (Birth Year 599 BC - 72 years life span of Lord Mahavir + current year 2010 AD = Veer Samvat Year 2536).

रवि	७	१४	२१	२८
सोम	१	८	१५	२२
मंगल	२	९	१६	२३
बुध	३	१०	१७	२४
गुरु	४	११	१८	२५
शुक्र	५	१२	१९	२६
शनि	६	१३	२०	२७

अपना अपना स्वभाव

एक बार एक भला आदमी नदी किनारे बैठा था। तभी उसने देखा एक बिच्छू पानी में गिर गया है। भले आदमी ने जल्दी से बिच्छू को हाथ में उठा लिया। बिच्छू ने उस भले आदमी को डंक मार दिया। बेचारे भले आदमी का हाथ काँपा और बिच्छू पानी में गिर गया। भले आदमी ने बिच्छू को डूबने से बचाने के लिए दुबारा उठा लिया। बिच्छू ने दुबारा उस भले आदमी को डंक मार दिया। भले आदमी का हाथ दुबारा काँपा और बिच्छू पानी में गिर गया। भले आदमी ने बिच्छू को डूबने से बचाने के लिए एक बार फिर उठा लिया। वहाँ एक लड़का उस आदमी का बार-बार बिच्छू को पानी से निकालना और बार-बार बिच्छू का डंक मारना देख रहा था। उसने आदमी से कहा, "आपको यह बिच्छू बार-बार डंक मार रहा है फिर भी आप उसे डूबने से क्यों बचाना चाहते हैं?"

भले आदमी ने कहा, "बात यह है बेटा कि बिच्छू का स्वभाव है डंक मारना और मेरा स्वभाव है बचाना। जब बिच्छू एक कीड़ा होते हुए भी उसका स्वभाव नहीं छोड़ता तो मैं मनुष्य होकर अपना स्वभाव क्यों छोड़ूँ? मनुष्य को कभी भी अपना अच्छा स्वभाव नहीं भूलना चाहिए।"

Maitree Samooh Blog

Maitree Samooh is now present on blogspot.com. You can follow us on the blog for the latest news, publications and happenings around Maitree Samooh, latest issues of Chirping Sparrow and information related to 108 Munishri Kshamasagarji are also available on the blog.

Needless to mention, your comments on the blog will be our biggest source of encouragement – so log on to <http://maitreesamooh.blogspot.com/> and start writing.

CELEBRATE AN ENVIRONMENTALLY SAFE DIWALI

In the Jain tradition, Diwali is celebrated as the Nirvana Kalyanaka of Bhagwan Mahaveer Swami. So the celebration of Diwali should be based on the virtues taught by Mahavir Swami. Burning firecrackers which leads to killing of insects and micro organisms and emotional hurt in the form of noise pollution, is completely against these virtues as it violates Ahimsa. It also violates the virtue of Aparigraha by wasting lot of money for the short lived joy of bursting the crackers. We should therefore vow not to burn firecrackers at our home and also ask our friends to do so.

Did you know that diyas lit on the moonless Diwali night signifies the end of darkness of ignorance and the beginning of light that enlightens all? Well, this Diwali enlighten yourself towards the hazards that boisterous celebrations of Diwali pose to our environment.

Avoid these 3 and celebrate an Eco Sensitive Diwali?

1. Air Pollution through Firecrackers
2. Excessive Consumerism
3. High Energy Consumption



1. Air Pollution through Firecrackers – Say NO to Fire crackers and YES to life!

Little do people realize that in our increasingly populated and polluted cities, the temporary joy of watching the firecrackers only adds to the intense air pollution. The toxic substances used in the firecrackers release toxic gases that are harmful to the health of all living beings. The high level of noise generated by the crackers cause immense suffering to birds and animals. Besides, Diwali crackers are dreaded by the sick and the ailing. Sadly, few of us realise that the firecrackers used on Diwali are mostly made by very young children. Since the substances being handled are extremely toxic many of these child labourers get sick and die in their early teenage years.

2. Excessive Consumerism

An indirect but equally significant impact of Diwali on nature is due to the increased consumption. Since Diwali is also a celebration of abundance and wealth - many people believe that it is a good time to buy. Often, people go out and buy new items even when they really don't need them. Advertisements and hoardings scream out to people offerings sales extravaganzas, bargains, discounts encouraging us to buy more and more!

How does this increased consumption affect Nature?

A point to realize is that all manmade items are made out of materials that come from Nature. Be it plastic, metal, paper or cloth - all of these raw materials come directly from nature. Those sources that are non renewable (cannot be grown back) such as fossil fuels and metal ores get depleted and will one day run out. Depletion of non renewable natural resources is one of the most significant impacts of consumerism. A question to ponder at this stage is, where do all the things we throw away go finally? Solid waste created by human beings which is non biodegradable (does not easily decompose) has to be filled into holes dug up in the ground. These 'landfills' as they are called may exist for centuries without completely getting integrated into the soil. The plastic toys that you are throwing away today, may exist in a landfill several generations after yours!

3. High Energy Consumption

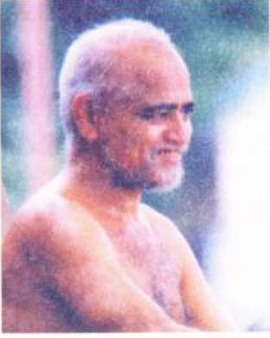
The festival of lights puts a considerably heavy load on electrical energy sources that are already overloaded. The use of electric lights to adorn homes, business establishments, monuments and roads requires a huge amount of electricity. The older tradition of burning oil lamps is a possible alternative to electric lights - even though it does use oil, the duration of the lamps is shorter.

Eco sensitive Initiatives around Diwali

With the growing recognition of the impacts of Diwali on the environment, several groups have started to reinterpret the rituals and traditions to become more sensitive to nature. For instance, the children of NCL school, Pune celebrate a different Diwali by sharing clothes with the lesser privileged. We all should also do our bit and celebrate Diwali in an eco friendly manner.



समत्व की साधना



सम्मेद शिखर जी की वंदना करके ईसरी चातुर्मास करने के उपरोक्त आचार्य महाराज संघ सहित तीर्थक्षेत्र उदयगिरी-खण्डगिरी पहुँचे। वहाँ कुछ दिन रुककर संबलपुर होकर रायपुर की ओर बढ़ते हुए रास्ते में एक स्थान 'अनगुल' में रुकना हुआ। स्थान एकदम अपरिचित था। जैन समाज वहाँ नहीं थी। अन्य लोगों ने भी कभी जैन साधुओं को नहीं देखा था, सो सहज उत्सुकता थी। आहार-चर्या के उपरान्त हाई-स्कूल के प्रांगण में ही रुकने का मन था, पर बच्चों के शोर के कारण समीप ही एक धर्मशाला में सामायिक के लिए श्रावको ने निवेदन किया। श्रावक इस बात से भी भयभीत थे कि कहीं कोई बच्चे उपद्रव न करें। सामायिक के उपरान्त बहुत सारी भीड़ धर्मशाला के समीप इकट्ठी हो गई। जो श्रावक साथ में थे, वे घबराए कि कहीं कोई अप्रिय घटना न हो जाए, लोग अज्ञानी हैं, सो सभी ने आचार्य महाराज से निवेदन किया कि ऐसे समय में आप मंत्र आदि के माध्यम से स्थिति पर नियंत्रण करें। मैंने भी बिना सोचे समझे इस बात का समर्थन कर दिया। श्रावकों से आचार्य महाराज ने कुछ नहीं कहा। हमसे कहा कि "अध्यात्म को भूल गए? साधना तो समत्व की होनी चाहिए। साधु को निःप्रतिकार

होना चाहिए। आत्मा की अनन्त शक्ति को पहचानो। वीतरागता के प्रभाव पर विश्वास रखो। चलो विहार करें।" और सहज, शान्त भाव से सीढ़ियाँ उतरने लगे। सारा संघ पीछे-पीछे हो गया। जैसे-जैसे आचार्य महाराज आगे बढ़ते जाते थे, भीड़ एक ओर होती जाती थी। यह देखकर सभी दंग रह गए। समत्व की साधना का अतिशय मेरे मन पर आज भी ज्यों का त्यों अंकित है। और संबल देता रहता है।

अनगुल, 1984

आत्मीय स्पर्श

जीवन
आकाश -सा हो
तो विस्तार
असीम है

वृक्ष -सा हो
तो छाया
सघन है

जीवन
सूरज-सा हो
तो रोशनी
हरदम है

जीवन में
आत्मीय स्पर्श हो
तो हर क्षण
स्वर्णिम है।

-मुनि क्षमासागर जी



SOULFULNESS

Life is endless
if it is like the sky
Life is a dense shade
if it is like tree.
If it is like the sun,
then life is light
Each moment is ecstasy
if life has soulfulness in it.

Translated by - Sunita Jain

मुक्ति से साभार

मैत्री समूह ब्लॉग

चर्पिंग स्पेरो के अंक, मुनिश्री के प्रवचन और जानकारी अब maitreesamooh.blogspot पर उपलब्ध है। आप पढिये और अपनी बात भी लिखिए।

वर्ष 2005 में मुझे 12वीं कक्षा में यंग जैन अवार्ड मुनि श्री के आर्शीवाद रूप में प्राप्त हुआ। मुझे वे क्षण याद आ रहे हैं कि वर्ष 2005 मुरैना के यंग जैन अवार्ड प्रोग्राम में जब मुनि श्री के साथ Interaction के समय मैंने एक बात मुनि श्री से कही "मुनि श्री मेरे साथ के सभी विद्यार्थी इंजीनियरिंग में प्रवेश ले चुके हैं और मैंने बी.एस.सी. में प्रवेश लिया है और सभी पूछते हैं कि तुमने हमारी तरह ही B.E. क्यों नहीं कर रहीं हो ? यह सुनकर मुझे अच्छा महसूस नहीं होता है और लगता है मानो कि मैं अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर पायी।" तब मुनिश्री ने अपने उत्तर में कहा कि कोई पढ़ाई अच्छी या बुरी नहीं होती है, उसे अच्छा या बुरा तो व्यक्ति स्वयं अपने Action द्वारा बनाता है, और कहा कि लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्पित रहो। जो भी कर रहे हो उसे पूर्ण निष्ठा व मन से संपन्न करो। आगे कोई रास्ता स्वयं ही मिल जाएगा। तब सन् 2008 में मेरी B.Sc. 70% से complete हो गई और मैं जिस कॉलेज "शा. सुभद्रा शर्मा कन्या महाविद्यालय गंजबासौदा" में अध्ययनरत थी, उसमें मुझे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी द्वारा घोषित फ़ैलोशिप प्रथम व द्वितीय वर्ष में प्राप्त हुई। अंतिम वर्ष में सर्वश्रेष्ठ गोल्डमेडल से सम्मानित किया गया। मेरे जीवन में इतने खुशी के पल मुनिश्री के आर्शीवाद, भगवान की कृपा, से ही मुझे मिल सके। B.Sc. complete होने के बाद मैं मानों चौराहे पर खड़ी हुई थी कि किस क्षेत्र में जाऊँ। इस दुविधा के चलते मैंने कई Competitive Examinations भी दिये और साथ में MSc. Physics में प्रवेश लेकर 72% से 1st Semester Pass किया। और साथ ही direct B.Sc. के Percentage basis पर काउंसलिंग में बैठी और मुझे SATI, Vidisha में Electronics and Communication – Branch में प्रवेश मिल गया। अब मैं 7 वे सेमिस्टर में हूँ। इस तरह जो मेरा B.E. करने का लक्ष्य था वह लंबे समय बाद मुनि श्री के आर्शीवाद से ही पूर्ण हुआ। मुनि श्री अब तक मेरे जीवन में प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

उनकी कविता—

“ जो ज्योति सा
मेरे हृदय में, रोशनी भरता रहा,
वो देवता

मुझे बहुत ही अच्छी लगती है जिसे मैं हमेशा गुनगुनाती रहती हूँ।

— नेहा जैन, गंजबासौदा

“जिन्दगी”

जिंदगी होती है मुस्कुराने के लिए,
कुछ खोने के लिए कुछ पाने के लिए।
न कि टूट कर बिखर जाने के लिए,
उसकी जिंदगी क्या जिंदगी है ?
जो भुला दी जाए उसके जाने के बाद।
उसकी जिंदगी ही सही जिंदगी है,
जो बन जाए दास्ताँ मौत के आने के बाद।

कीर्ति जैन, देवरी,

YOUNG JAINA ACHIEVERS 2010

Maitree Samooh is proud to launch the Young Jaina Achievers 2010 - An initiative to recognize young Jain talent in fields such as Education, Culture, Arts, Sports, Literature, Civil Services, Competitive Exams, Social Initiatives.

In continuation of our efforts to recognize the young talent, promote high education and inculcate Indian values we have decided to dedicate the forthcoming Oct- Dec 2010 issue of 'Chirping Sparrow' for this. We invite applications for Young Jaina achievers 2010. Please include achievements of last academic year (2009-10) only.

यंग जैन अचीवर्स की पहचान के लिए मैत्री समूह ने young achievers 2010 form तैयार किया है।

शिक्षा, संस्कृति, कला, खेल, साहित्य, प्रशासनिक सेवाओं प्रतिस्पर्धा परीक्षाओं, सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में वर्ष 2009 - 2010 विशिष्ट उपलब्धियों को प्राप्त करने वाले इस फॉर्म को अवश्य भरें। हम अपने आगामी अंक में यह जानकारी जरूर छापेंगे।

Please find further details and the link below.

<http://maitreesamooh.blogspot.com/p/young-jaina-achievers.html>

For any query feel free to contact us at:

Phone No: +91 9425424984, +91 9827440301

Email: samooh.maitree@gmail.com, maitreesamooh@hotmail.com

Address: Maitree Samooh, Post bag No. 15 Vidisha, Madhya Pradesh, PIN - 464002



महात्मा गांधी ने अपने संस्मरण में लिखा है :- मैंने गुरु नहीं बनाया, किंतु मुझे कोई गुरु मिले तो वे हैं रायचंद भाई। रायचंद भाई पहले बंबई में जवाहरात का व्यापार करते थे। उन्होंने एक व्यापारी से सौदा किया। यह निश्चित हो गया कि अमुक तिथि तक, अमुक भाव में इतने जवाहरात वह व्यापारी देगा। व्यापारी ने रायचंद भाई के साथ लिखा-पढ़ी कर ली। यह संयोग की बात थी कि जवाहरात के मूल्य बढ़ने लगे और इतने अधिक बढ़ गए कि यदि रायचंद भाई को उनके जवाहरात वह व्यापारी दे तो उसे इतना घाटा होता कि उसका स्वयं का घर भी नीलाम हो जाता। जब रायचंद भाई को जवाहरात के वर्तमान बाजार भाव का पता लगा तो वे उस व्यापारी की दुकान पर पहुँचे। उन्हें देखते ही व्यापारी बोला- मैं आपके सौदे के लिए स्वयं चिंतित हूँ। रायचंद ने कहा- तुम्हें जब चिंता लग गई तो मुझे भी चिंता होनी चाहिए। दोनों की चिंता का कारण यह लिखा-पढ़ी है। इसे समाप्त कर दें तो दोनों की चिंता खत्म हो जाएगी। रायचंद ने लिखा-पढ़ी के कागज को फाड़ते हुए कहा- इस लिखा-पढ़ी से तुम बंध गए थे। बाजार भाव बढ़ने से मेरा चालीस-पचास हजार रुपया तुम पर लेना हो गया, किंतु मैं तुम्हारी परिस्थिति जानता हूँ। रायचंद दूध पी सकता है, खून नहीं पी सकता। व्यापारी यह कहते हुए कि आप मनुष्य नहीं, देवता हैं, रायचंद के चरणों में झुक गया।

किसी भी तरह दूसरे की परिस्थिति से लाभ उठाने को आतुर आज के स्वार्थी समाज को ऐसे महापुरुषों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

BOOK-POST

Chirping Sparrow

Year - 7, Issue - IV, September 2010

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

From

MAITREE SAMOOH

Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001

E-mail : maitreesamoooh@hotmail.com,

Website : www.maitreesamoooh.com

Mob.: 94254-24984

To, _____

